संपादकीय

त्रिकोणीय मुकाबला

दिल्ली में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) और कांग्रेस के बीच लोकसभा चुनाव को लेकर चुनावी गठबंधन नहीं हो पाने से अब देश की राजधानी में त्रिकोणीय संघर्ष होने जा रहा है। अभी प्रदेश की सभी सीटें भाजपा के पास हैं। दिल्ली में तीन दलों के मैदान में होने व राष्ट्रीय मुद्दों के इर्दगिर्द सिमटी यह चुनावी जंग दिलचस्प होने जा रही है। कांग्रेस और आप की इस 'दोस्ती' के प्रयासों को लेकर दिल्ली समेत पूरे देश में लोगों के मन में यह सवाल उठ रहा है कि आखिरकार मात्र 5 साल में ऐसा क्या कुछ बदल गया कि एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी ये दल गठबंधन के लिए बेकरार होने लगे। लोकपाल और भ्रष्टाचार के खिलाफ समाजसेवी अन्ना हजारे के आंदोलन से निकले अरविंद केजरीवाल क्यों उन शीला दीक्षित के साथ जाने के लिए लालायित हो गए, जिन्हें वे भ्रष्टाचार के आरोप में जेल भेजने की बात करते थे। 2015 में दिल्ली विधानसभा की 70 में से 67 सीटें जीतने वाली आप की ऐसी क्या मजबूरी रही है कि वह उस कांग्रेस के दरवाजे पर गठबंधन के लिए याचक की मुद्रा में खड़ी हो गई, जिसका दिल्ली में एक भी सांसद व विधायक नहीं है। दरअसल, आप प्रमुख व दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल लंबे समय से उस विपक्षी महागठबंधन का हिस्सा बनने की कोशिश में लगे हैं, जो मोदी के खिलाफ कभी भी अंतिम स्वरूप नहीं ले पाया।

दिल्ली के बाहर आप के पांव पसारने के प्रयासों में लगे केजरीवाल मोदी विरोधी दलों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने का संदेश देने के लिए भी कांग्रेस के पाले में जाने के लिए लालायित रहे हैं। इसके अलावा सबसे बड़ा कारण दिल्ली विधानसभा के बाद हुए चुनावों के आंकड़े हैं। 2014 में मोदी की लहर में सभी 7 सीटें भाजपा की झोली में चली गईं, जबकि कांग्रेस और आप खाता भी नहीं खोल पाए। हालांकि 2015 के विधानसभा के चुनाव में 54.3 प्रतिशत वोट व 67 सीटों के साथ आप को प्रचंड बहुमत मिला। जबकि भाजपा 32 फीसदी वोट पर सिमट गई, लेकिन दो साल बाद 2017 में दिल्ली के तीनों नगर निगमों के चुनाव में भाजपा ने जीत की हैट्रिक लगा दी और उसका 5 फीसदी वोट भी बढ़ गया। आप का वोट 26 फीसदी घट गया। जबकि विधानसभा चुनाव में 9.7 फीसदी वोट पाने वाली कांग्रेस को 21.28 फीसदी वोट मिले। इसीलिए केजरीवाल गठबंधन चाहते थे। आप का आकलन है कि दोनों दल मिलकर भाजपा को शिकस्त दे सकते हैं। दिल्ली में ये चुनाव इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं कि एक साल बाद विधानसभा के चुनाव भी होने हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने आरबीआई से आरटीआई के तहत बैंकों की वार्षिक निरीक्षण रिपोर्ट के बारे में सूचना का खुलासा करने का निर्देश दिया

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने आरबीआई से आरटीआई के तहत बैंकों की वार्षिक निरीक्षण रिपोर्ट के बारे में सूचना का खुलासा करने का निर्देश दिया जब तक कि उन्हें कानून के तहत इससे छूट ना मिल जाए। साथ ही, यह चेतावनी भी दी कि भविष्य में इस तरह के उल्लंघन को गंभीरता से लिया जाएगा। शीर्ष न्यायालय ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) आरटीआई के तहत ÷राष्ट्रीय आर्थिक÷ हित के विषयों को छोड़ कर निरीक्षण रिपोर्ट के बारे में सभी सूचनाएं और अन्य साम्रगी देने के लिए कर्तव्यबद्ध है आरबीआई ने न्यायालय के समक्ष कहा कि खुलासा नीति को वेबसाइट से हटा दिया जाएगा। न्यायमूर्ति एल नागेश्वर राव और न्यायमूर्ति एम आर शाह की पीठ ने इस तथ्य पर कड़ी आपत्ति जताई कि आरबीआई ने उसके 16 दिसंबर 2015 के फैसले का उल्लंघन किया और न्यायालय के अवमानना याचिकाओं पर फैसला सुरक्षित रख लेने के बाद केंद्रीय बैंक ने 12 अप्रैल को अपनी वेबसाइट पर नयी खुलासा नीति जारी की।

नयी नीति के तहत आरबीआई ने विभिन्न विभागों को निर्देश दिया था कि वे उन सूचनाओं का खुलासा नहीं करें जिनका शीर्ष अदालत ने अपने पूर्व के फैसलों में खुलासा करने को कहा था। शीर्ष अदालत ने कहा, हमारी राय में प्रतिवादियों (आरबीआई) ने उन सामग्रियों के खुलासे से मना करके इस अदालत की अवमानना की है, जिन्हें इस अदालत ने देने का निर्देश दिया था। पीठ ने यह बात केंद्रीय बैंक को इसमें सुधार करने का अंतिम अवसर देते हुए कही। पीठ ने कहा, यद्यपि प्रतिवादियों के इस अदालत के निर्देशों का उल्लंघन करना जारी रखने पर हम गंभीर रुख अपना सकते थे, लेकिन हम उन्हें खुलासा नीति में दी गई वैसी छूट को वापस लेने का अंतिम मौका देते हैं जो इस अदालत के निर्देशों के विपरीत हैं। पीठ ने अपने फैसले में कहा कि प्रतिवादी निरीक्षण रिपोर्ट और सामग्री के अलावा अन्य सामग्री से संबंधित सूचना देने के लिये कर्तव्य से बंधे हैं। किसी भी तरह के उल्लंघन को गंभीरता से लिया जाएगा।गौरतलब है कि इस साल जनवरी में शीर्ष अदालत ने सूचना के अधिकार कानून के तहत बैंकों की वार्षिक निरीक्षण रिपोर्ट का खुलासा नहीं करने के लिए आरबीआई को अवमानना नोटिस जारी किया था। इससे पहले उच्चतम न्यायालय और केंद्रीय सूचना आयोग ने कहा था कि आरबीआई तब तक पारदर्शिता कानून के तहत मांगी गई सूचना देने से इनकार नहीं कर सकता जब तक कि उसे कानून के तहत खुलासे से छूट ना प्राप्त हो।

रेलवे ट्रेन टिकट रिजर्वेशन से जुड़े इस नियम में करेगा बदलाव, यात्रियों को होगा फायदा

नई दिल्ली (आरएनएस)। अगर आप भारतीय रेल से सफर करते हैं तो ये खबर आपके लिए बेहद खास है। भारतीय रेलवे अपने यात्रियों की सुविधा को बेहतर बनाने के लिए नए-नए कदम उठाता रहता है। इसी कड़ी में भारतीय रेलवे ने यात्रियों के लिए एक बड़ा कदम उठाया है जिसमें ट्रेन टिकट बुक कराते वक्त अपने जिस बोर्डिंग स्टेशन को चुना है, लेकिन बाद में इस स्टेशन को बदलवाना चाहते हैं, तो अब 1 मई से यह काम आसानी से हो जाएगा। लेकिन इसमें एक शर्त भी है। रेलवे का कहना है कि इस टिकट पर कैंसल कराने पर रिफंड नहीं मिलेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि आगामी 1 मई से रेलवे के टिकटिंग से जुड़े नियमों में कई बदलाव होने वाले हैं। 1 मई से ट्रेन के चार्ट बनने से चार घंटे पहले तक आप अपना बोर्डिंग स्टेशन बदलवा सकेंगे। अभी इसे सिर्फ 24 घंटे पहले तक ही बदला जा सकता है। यात्रा के बोर्डिंग स्टेशन में बदलाव किया जाता है, तो टिकट कैंसिलेशन पर उसे पैसा रिफंड नहीं दिया जाएगा।

टिकट के बाद भी बोर्डिंग स्टेशन चेंज- अगर आपने टिकट बुक कराते समय बोर्डिंग स्टेशन का चयन किया है, लेकिन बाद में आप इसमें बदलाव करना चाहते हैं। तो आप 1 मई से यह बदलाव दोबारा भी कर सकते हैं। जबकि अभी टिकट बुकिंग के दौरान बोर्डिंग स्टेशन का चयन करने के बाद दोबारा बोर्डिंग स्टेशन में बदलाव नहीं किया जा सकता है।

कच्चे तेल की तेजी पर लगा ब्रेक, ओपेक के फैसले का इंतजार

नई दिल्ली (आरएनएस)। तेल उत्पादक देशों का समूह आर्गेनाइजेशन ऑफ पेट्रोलियम एक्सपोर्टिंग कंट्रीज(ओपेक) द्वारा कच्चे तेल का उत्पादन बढ़ाए जाने की संभावनाओं के बीच तेल के दाम में आई तेजी पर ब्रेक लग गया है। अंतर्राष्ट्रीय वायदा बाजार में शुक्रवार को कच्चे तेल में लगातार दूसरे दिन गिरावट दर्ज की गई, जिसका असर घरेलू बाजार पर भी दिखा और एमसीएक्स पर कच्चे तेल का भाव डेढ़ फीसदी तक लुढ़क गया। अमेरिका द्वारा ईरान से तेल खरीददारों को दी गई छूट बंद करने की घोषणा के बाद तेल के दामे में जोरदार तेजी आई और ब्रेंट क्रूड 75 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर चला गया। हालांकि ओपेक द्वारा तेल का उत्पादन बढ़ाए जाने की उम्मीद की जा रही है। बाजार के जानकार बताते हैं कि ईरान पर प्रतिबंध के बाद कच्चे तेल की आपूर्ति में आने वाली कमी की भरपाई करने के लिए ओपेक के सदस्य देश अपना उत्पादन बढ़ा सकते हैं।

दस सप्ताह में पहली बार घटा विदेशी मुद्रा भंडार

मुंबई (आरएनएस)। देश के विदेशी मुद्रा भंडार में 10 सप्ताह में पहली बार गिरावट आयी है और 19 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में यह 73.92 करोड़ डॉलर घटकर 414.15 अरब डॉलर रह गया। इससे पहले 12 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में यह 1.11 अरब डॉलर बढ़कर करीब 11 महीने के उच्चतम स्तर 414.89 अरब डॉलर पर पहुंच गया था। रिजर्व बैंक द्वारा शुक्रवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, 19 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार का सबसे बड़ा घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 72.86 करोड़ डॉलर घटकर 386.03 अरब डॉलर रह गया।

1 मई से एयर इंडिया टिकट कैंसिल कराने पर नहीं लगेगा कोई शुल्क

मुंबई। एयर इंडिया ने टिकट बुक करने के 24 घंटे के भीतर उसे रद्द करने या उसमें बदलाव करने पर एक मई से कोई शुल्क नहीं लेने का निर्णय लिया है. यह फैसला एक मई से लागू होगा. इसकी जानकारी एयरलाइन के एक दस्तावेज से मिली है.हालांकि, यात्री इस सुविधा का लाभ तभी ले पाएंगे जब उनके द्वारा बुक टिकट कम से कम सात दिन बाद के लिए हो. भारतीय विमानन नियामक डीजीसीए ने 27 फरवरी को 'पैसेंजर चार्टर' जारी किया. इसमें यह भी शामिल है, जो एक मई से लागू होगा. एयर इंडिया के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) द्वारा 24 अप्रैल को जारी एक सर्कुलर में इस फैसले को लागू करने की जानकारी दी गई है.

आज का राशिफल

मेषः- आज कार्य व्यापार में उन्नति का दिन है। आज किया हुआ कार्य अथवा लिया गया निर्णय आपको सफलता दिलाएगा।

वृषभः- भाग्य आज आपका साथ देने को बेताब है, कर्म करते जाएं और सब कुछ भाग्य पर छोड़ दें। आज आप परिजनों के साथ मिलकर घरेलू मामलों में महत्वपूर्ण विचार विमर्श करेंगे।

मिथुनः- आज यात्रा करने से परहेज करें, किसी से अनावश्यक वाद-विवाद अथवा चोट-चपेट की घटना चिंताओं का कारण हो सकती है।

कर्कः- उन्नतिदायक दिन, जीवनसाथी अथवा किसी प्रिय व्यक्ति का सहयोग प्राप्त होगा। मन प्रसन्न रहेगा। विदेश जाने के इच्छुक लोगों के लिए अनुकूल संयोग बनेंगे।

सिंहः- रुका हुआ धन प्राप्त होगा, अचानक कोई शुभ समाचार मिलेगा। शत्रु एवं विरोधी आपसे दूर भागेंगे। मित्रों और परिवार के लोगों के साथ आनंद के पल गुजारेंगे।

कन्याः- सुबुद्धि के बल पर कार्य बनेंगे और कुबुद्धि के कारण कार्य बिगड़ भी सकते हैं, अतः- सोच-विचारकर बुद्धि बल का प्रयोग करें।

तुलाः- आज वाणी पर नियंत्रण रखेंगे तो दिन सुख व शांति से बीतेगा। अन्यथा किसी व्यक्ति से वाद-विवाद के कारण मन दुखी रह सकता है।

वृश्चिकः- पराक्रम में वृद्धि का दिन है। रुके हुए कार्य गति पकड़ेंगें। यात्रा से लाभ होगा। भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। पारिवारिक सदस्यों के साथ मिलकर आप आनंदपूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

धनुः- शेयर आदि जोखिमपूर्ण कार्य में सोच-समझकर ही पहल करें। वाणी के प्रदर्शन से धनार्जन अथवा रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे।

मकरः- आज शत्रुओं पर आपकी विजय सुनिश्चित है। कोर्ट-कचहरी के मामलों में सफलता मिलेगी। आर्थिक लाभ के योग हैं।

कुंभः- खर्च के योग बन रहे हैं। सोच-समझकर ही धन-निवेश करें। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें, यात्रा से परहेज करें। विद्यार्थियों की पढ़ाई में विघ्न आ सकता है।

मीनः- आज जो भी कार्य करेंगे उसमें पूर्ण लाभ की संभावनाएं सुनिश्चित हैं। मन प्रसन्न रहेगा। धन निवेश में लाभ के प्रबल योग।

नीरव मोदी को झटका, जमानत याचिका फिर रद्द

लंदन (आरएनएस)। पीएनबी स्कैम में एक अरब डॉलर की धोखाधड़ी और मनी लांड्रिंग मामले में भगोड़े हीरा कारोबारी नीरव मोदी को आज लंदन की अदालत ने करारा झटका दिया है। नीरव मोदी की जमानत याचिका आज अदालत ने रद्द कर दी। मामले की अगली सुनवाई 24 मई को होगी। 48 वर्षीय मोदी दक्षिण-पश्चिम लंदन की वैंड्सवर्थ जेल में बंद है। उसकी पेशी वीडियो कांफ्रेंसिंग से हुई।

उधर, पीएनबी घोटाले के आरोपी भगोड़ा हीरा कारोबारी नीरव मोदी और मेहुल चोकसी की 12 लग्जरी कारों की नीलामी पूरी हो गई। सभी कारों की नीलामी गुरुवार को सरकारी कंपनी एमएसटीसी की वेबसाइट के माध्यम से की गई। नीलाम हुई कारों में 10 नीरव मोदी ग्रुप की और 2 मेहुल चोकसी ग्रुप की हैं। इनमें एक रोल्स रॉयस और एक पोर्श कार भी शामिल है। इन कारों को बेचने से ईडी को 3.29 करोड़ रुपये मिले हैं।

यह ई-ऑक्शन एमएसटीसी ने ईडी की तरफ से की. नीरव की एक टोयोटा कार का कोई खरीदार नहीं मिला।

डिंडा ने आरसीबी के ट्वीट का ऐसा जवाब दिया कि टीम को अपना ट्वीट डिलीट करना

चेन्नई। पिछले कुछ वक्त से इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल गेंदबाजों के खराब प्रदर्शन के बाद भारत के तेज गेंदबाज अशोक डिंडा को सोशल मीडिया पर जमकर ट्रोल किया जा रहा है। इसी कड़ी में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर ने भी उमेश यादव को लेकर अशोक डिंडा को लेकर ट्रोल करने की कोशिश की। लेकिन डिंडा ने आरसीबी के ट्वीट का ऐसा जवाब दिया कि टीम को अपना ट्वीट डिलीट करना पड़ा।भारत के तेज गेंदबाज अशोक डिंडा ने गुरुवार को रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर को करारा जवाब देते हुए अपनी उपलब्धियां गिनवाई हैं। अशोक डिंडा ने इंस्टाग्राम अकाउंट पर लिखा- मुझे नापसंद करने वालों, आंकड़े निकाल कर देखो, आपको मदद मिलेगी। मुझ पर तंज करना बंद करो। आपकी राय मेरे जीवन का सच नहीं है। लिहाजा मुझसे नफरत करना बंद करो, और मुझे इअशोक डिंडा की यह प्रतिक्रिया इंडियन प्रीमियर लीग की उनकी पहली टीम के उस ट्वीट के जवाब में आई है, जिसमें उन्हें खराब गेंदबाज कहा गया था। आरसीबी के तेज गेंदबाज उमेश यादव ने किंग्स इलेवन पंजाब के खिलाफ तीन विकेट लिए थे और टीम के सोशल मीडिया पर ट्वीट किया था, डिंडा की अकादमी, यह क्या है। हालांकि बाद में फ्रैंचाइजी ने इस ट्वीट को डिलीट कर दिया और इसकी सफाई भी दी। ससे बाहर निकालो। इसके बाद आरसीबी ने एक और ट्वीट करते हुए कहा, किसी ने इस ट्वीट को बुरी नीयत से किया गया ट्वीट बताया और उन्हें ट्रोल किया।

घर पर बनाएं 'पान आइसक्रीम' ...

आइसक्रीम का नाम सुनते ही सभी की जुबां पर पानी आ जाता है। बच्चे हो या बूढ़े सभी आइसक्रीम खाने के शौकीन होते हैं। खासकर बच्चे उन्हें हर फ्लेवर की आइसक्रीम टेस्ट करने का बड़ा शौक होता है। उसी तरह आपके घर में कई लोग होंगे जिन्हे पान खाना बहुत पसंद होगा। तो इस गर्मी के दिन में हम आपके लिए पान और आइसक्रीम से जुड़ी ही रेसिपी लेकर आए हैं। जी हां, आज हम आपको बताएंगे कि घर पर पान आइसक्रीम कैसे बना सकते है। इसे आप घर के सभी लोगो को खिला सकते है।

सामग्रीः

पान के 3 पत्ते, 2 चम्मच गुलकंद, 1 चम्मच सौंफ, 1/2 चम्मच इलायची पाउडर, 3 केले (टुकड़ों में कटा हुआ), 300मि.ली. दूध, 2 चम्मच चीनी, हरा फूड कलर (चाहें तो)।

विधिः

सबसे पहले एक मिक्सर जार में पान के पत्तों को काटकर डाल दें, अब इसमें सौंफ, इलायची पाउडर, गुलकंद और केले डालकर अच्छे से पेस्ट बना लें। इसके बाद दूध डालकर एक और बार अच्छे से फेंट लें, आप चाहें तो पेस्ट में जरा सा हरा रंग भी मिला सकते हैं।

तैयार पेस्ट को अब एक ट्रे में डालें, ट्रे में आइसक्रीम डालने से प्लास्टिक रैप जरूर लगा लें।

ट्रे को ऊपर से भी प्लास्टिल रैप से बंदकर जमने के लिए फ्रिजर में रख दें, लगभग 4-5 घंटे में आइसक्रीम बनकर तैयार हो जाएगी।

अब इसके स्कूप्स निकालकर चेरी की टॉपिंग के साथ ठंडी-ठंडी सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य-47

बाएं से दाएं
1. बात, घटना, माजरा, मुकदमा (उर्दू) 3. अलावा, अतिरिक्त 6. प्रेम, इच्छा 7. मां का बच्चे के प्रति प्रेम 8. गलती, जुर्म, गुनाह, दोष 10. मग्न, लीन, खुश, प्रसन्न 12. धनुष, समादेश, फौजी टुकड़ी 13. एक कल्पित पत्थर जो लोहे को छूकर सोना बना देता है 16. हिम्मत, साहस, सामर्थ्य 17. बनावटी, अनुकृति, असली का विलोम 18. अबोध, नासमझ 20. ब्रह्मपुत्र एक प्रसिद्ध हरिभक्त देवर्षि 22. गहरा नीला, काला 23. व्याकुल, बेसब्र 24. मन, चित्त, आदरसूचक तथा सहमति सूचक एक शब्द।

ऊपर से नीचे
1. स्वामी, नाथ 2. बेबस, मजबूर, विवश 3. अन्याय, अत्याचार, जुल्म 4. मध्य एशिया का एक देश 5. पुस्तक 9. बहादुर, वीर 11. सैनिक विद्रोह 12. नीच, अधम 12 ए. प्रणाम, झुकना 13. भरण-पोषण करना, परवरिश करना, छोटा झुला, हिंडोला 14. प्रमाण, प्रमाणिक कथन 15. स्वाभाविक ढंक, योग्यता, लियाकत, सभ्यता और शिष्टता, शऊर (उ.) 19. बिजली, तड़ित 21. रात में दिखाई न पड़ने का नेत्र संबंधी रोग।

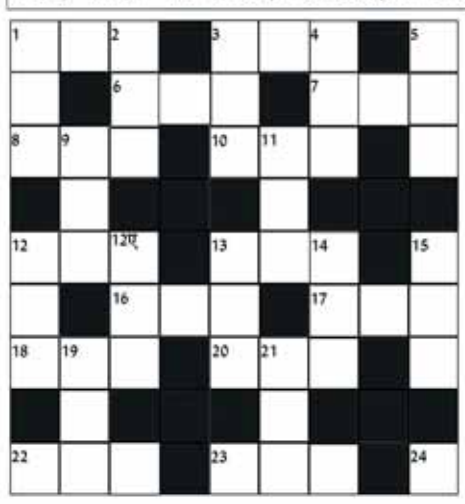

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 46 का हल

प	सं	द	■	सिं	हा	स	न	■
ख	■	म	ज	दू	र	■	का	म
वा	द	क	■	र	■	सं	ब	ल
ड़	■	ल	ज्ञा	■	म	स्का	■	य
■	बा	■	■	बि	हा	र	■	■
सु	धा	क	र	■	न	■	■	औ
रं	■	म	■	कि	ता	ब	■	स
ग	■	अ	र	सा	■	हु	ज्ज	त
■	श	क्ल	■	न	मि	त	■	न

सू-दोकू-47

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक रख सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.46 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6